www.futuresamachar.com
ISSN 2278-7933 PRICE : Rs. 50/-

All India Federation Of Astrologers' Societies

Research Journal of Astrology

VOL: 18 NO.: 1 January - March 2020

सरकारी नौकरी योगों का अध्ययन

उदर रोग में ग्रह योग की समीक्षा

कैंसर रोग और काल निर्धारण

मेलापक में मंगल का प्रभाव

व्यवसायी बनने के योग

अष्टकूट मेलापक

Assessment of Child Birth as per Transit

Flagship Store : A-3, Ring Road, South Ex. Part-1, New Delhi - 49
Ph : 011-40541000-28, M: 9911865656, 9910080002
Branch Off. : B-237, Sector - 26, Noida (U.P.)-201301
www.futurepointindia.com www. indianastrology.com
www.leotouch.in www.leostar.com

Contents

From the Editor's Desk

10	Editor's Desk	By Dr. Arun Bansal

Research

12	**Assessment of Child Birth as per Transit** By Tanvi Bansal

Review

22	**Moon's Effect on Health & Wealth** By Sitaram Singh
25	**Consciousness and Activity of Planets** By Punit Vora

शोध

28	**व्यवसायी बनने के योग** सुशील अग्रवाल
33	**उदर रोग में ग्रह योग की समीक्षा** अर्चना शुक्ला
40	**मेलापक में मंगल का प्रभाव** सचिन आत्रेय
43	**अष्टकूट मेलापक** वनीत शर्मा
46	**कैंसर रोग और काल निर्धारण** प्रवीणा पाठक
50	**सरकारी नौकरी योगों का अध्ययन** ओम प्रकाश शर्मा

व्यवसायी बनने के योग

प्रो. डॉ. चन्द्र कान्त शर्मा, प्रोफेसर ज्योतिष विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तोड़गढ़, राजस्थान
सुशील अग्रवाल, शोधार्थी, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तोड़गढ़, राजस्थान

ऋषि-मुनियों ने अनवरत तप, साधना और परिश्रम से जन-साधारण के लिए अनेक ज्योतिषीय सूत्र दिए, परन्तु ज्योतिषीय ग्रन्थों में व्यवसायी बनने के जाँचे-परखे संकलित सूत्र नहीं मिलते। यत्र-तत्र बिखरे कुछ सूत्र ही प्राप्त होते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि प्राचीन समय में आजीविका के स्रोत सीमित थे और सूचना-प्रसारण, यातायात एवं तकनीकी क्षेत्र भी विकसित नहीं थे, जिस कारणवश मनुष्य अपने पारिवारिक कार्यक्षेत्र का अनुसरण करने के लिए बाध्य था। आधुनिक युग में आजीविका के स्रोत असीमित हैं और सभी प्रकार की तकनीकी सहायता भी उपलब्ध है जिससे मनुष्य अब अपने पारिवारिक कार्यक्षेत्र का अनुसरण करने के लिए बाध्य नहीं रह गया है। अतः आधुनिक सामाजिक परिपाटी में 'व्यवसायी बनने के योग' एक महत्त्वपूर्ण विषय है परन्तु इस सन्दर्भ में पूर्व-निर्धारित ज्योतिषीय सूत्रों की कमी के कारण जन-साधारण का उचित मार्गदर्शन नहीं हो पा रहा है। इस अभाव के निराकरण हेतु इस विषय पर शोध किया गया। इस शोध के अत्यन्त उत्साहवर्धक परिणाम प्राप्त हुए हैं जिनका प्रस्तुतिकरण इस लेख में किया जा रहा है।

शोध-प्रकार : यह शोध, अनुप्रयुक्त शोध (Applied Research) है क्योंकि इसमें व्यवसायी बनने के योगों का निर्धारण किया गया है जो ज्योतिष क्षेत्र की एक आधुनिक समस्या है। यह शोध एक विश्लेषणात्मक शोध भी है क्योंकि इस शोध के प्रमेयों का आकलन विश्लेषणात्मक होना ही संभव है।

आँकड़ों की संकलन विधि : विश्व के सभी व्यवसायियों के जन्म विवरण का कोई एकल स्रोत नहीं है और यह भी अनुमान लगाना संभव नहीं है कि विश्व में कुल कितने व्यवसायी हैं। इसीलिए इस शोध में असम्भाव्यता निदर्शन (Non-Probability Sampling) विधि अपनाई गई है। असम्भाव्यता निदर्शन में भी उद्देश्यपूर्ण निदर्शन (Purposive Sampling) विधि अपनायी गई है जिसमें प्रत्यक्ष रूप से केवल उन्हीं जातकों के आंकड़े एकत्रित किये गए हैं जो शोध-विषय के अंतर्गत हों।

आँकड़े : आँकड़ों की प्रामाणिकता के लिए आंकड़ों का संकलन केवल विश्वसनीय स्रोतों से ही किया गया है। इसके अतिरिक्त, इस शोध में केवल 40 साल की उम्र से अधिक जातकों के आँकड़े ही सम्मिलित किये गए हैं क्योंकि अनेक बार ऐसा देखा जाता है कि जातक कुछ वर्षों की नौकरी के पश्चात व्यवसाय आरम्भ करते हैं या कुछ वर्षों के व्यवसाय के बाद नौकरी में आ जाते हैं। इस शोध में 1008 कुंडलियाँ संकलित की गई हैं जिनमें से 504 कुंडलियाँ (50%) व्यवसायियों की और शेष 504 कुंडलियाँ (50%) नौकरीपेशा जातकों की हैं।

प्रमेय : साहित्यिक सर्वेक्षण और आधुनिक पुस्तकों [1-16] के आधार पर मुख्य प्रमेय निम्न रूप से वर्गीकृत किये गए हैं :

लग्न की राशि-स्थिति के आधार पर

- लग्न में तुला राशि हो तो जातक व्यापारकुशल और गुणी होने से धन लाभ करता है।
- लग्न से दशम भाव में यदि तुला राशि हो तो जातक व्यापार में लीन होता है।
- एकादश भाव में यदि तुला राशि हो तो जातक विविध व्यापार से लाभ करने वाला होता है।
- दशम भाव में चर राशि हो तो जातक महत्वाकांक्षी, प्रगतिशील, धन, मान व यश के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है तथा स्वरोजगार या अपने निजी व्यापार द्वारा लाभ पाता है।

ग्रह की राशि-स्थिति के आधार पर

- सूर्य यदि अपनी उच्च राशि, स्वराशि या अपनी मूल-त्रिकोण राशि में हो तो जातक अपने बाहुबल से धनार्जन करता है।
- चन्द्र यदि मिथुन राशि में हो और बुध से दृष्ट हो तो जातक धन पैदा करने में चतुर होता है।
- चन्द्र यदि तुला राशि में हो तो जातक खरीद-फरोख्त में होशियार होता है।

- मेष या वृश्चिक राशि में यदि मंगल स्थित हो तो जातक राजपक्ष से सत्कार पाने वाला, भ्रमणशील, सेनापति, व्यापारी व धनी होता है।
- तुला राशि में बुध हो तो जातक चित्रकारी व विवाद में लीन, वाणी से चतुर, धन को इच्छानुसार खर्च करने वाला, अनेक दिशाओं में व्यापार करने का इच्छुक, ब्राह्मण का सम्मान करने वाला, देशभक्त, चापलूस और शान्तिप्रिय होता है।

ग्रह की भाव-स्थिति के आधार पर

- सूर्य यदि लग्न से दशम भाव में हो तो जातक को अनेक उद्योगों से धन लाभ होता है।
- एकादश भाव में बुध हो तो जातक को अनेक प्रकार से धन लाभ होता है।
- लग्न से बृहस्पति यदि दशम भाव में हो तो जातक को अनेक व्यापार से धन लाभ होता है।
- बृहस्पति या शनि यदि सप्तम भाव में हों या सप्तम भाव को दृष्ट करें तो जातक साझेदारी के कार्य अथवा वस्तुओं के क्रय-विक्रय से आजीविका कमाता है।
- द्वितीय भाव में यदि शुक्र हो तो जातक दूसरों के धन से धनवान, चाँदी, सीसा आदि व्यापार से धनवान, सदा लड़कपन से युक्त, दुर्बल देह, प्रिय वक्ता और बहुतों का पालक होता है।
- शुक्र यदि नवम भाव में हो तो जातक अपने भुजबल से धन-सुख उपार्जन करने वाला होता है।
- शुक्र यदि एकादश या द्वितीय भाव में हो और तृतीय भाव बलवान हो तो जातक व्यापार में सफलता पाता है।
- लग्न से दशम भाव में शनि हो तो भृत्यों से धनागमन होता है।

भावेश की भाव-स्थिति के आधार पर

- लग्नेश यदि दशम भाव में हो तो जातक व्यापारी होता है।
- द्वितीयेश यदि लग्न में या द्वितीय भाव में या एकादश भाव में हो तो जातक व्यवसायी होता है।
- द्वितीयेश यदि एकादश भाव में हो तो जातक सभी प्रकार से लाभ करने वाला, सदा उद्योगी, मानी और यशस्वी होता है।
- तृतीयेश यदि लग्न में या दशम भाव में या एकादश भाव में हो तो जातक व्यापार से धनी होता है।
- तृतीयेश यदि एकादश भाव में हो तो जातक व्यापार से धनी, बिना पढ़ा-लिखा भी बुद्धिमान, साहसी और दूसरों की सेवा करने वाला होता है।
- चतुर्थेश यदि तृतीय भाव या पंचम भाव में हो तो जातक स्व-भुजबल से धनार्जन करने वाला होता है।
- सप्तमेश यदि द्वितीय भाव में हो और बुध सप्तम भाव में हो तो जातक व्यापारी होता है।
- नवमेश यदि एकादश भाव में हो तो जातक नित्य लाभ करने वाला होता है।
- एकादशेश यदि लग्न में या एकादश भाव में हो तो जातक सदा लाभ करने वाला होता है।
- द्वादशेश यदि अष्टम भाव में हो तो जातक अधिक लाभ करने वाला होता है।

ग्रहों की परस्पर स्थिति के आधार पर

- सूर्य और शुक्र की यदि युति हो तो जातक नाट्य कर्मादि में प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं के व्यापार से या शस्त्रों के व्यापार से जीविका कमाने वाला होता है।
- शनि से वेशि योग (सूर्य स्थित भाव से शनि अगले भाव में हो, अर्थात सूर्य-शनि द्वि-द्वादश हों) हो तो व्यापार-कला में बुद्धि रखने, दूसरे का धन हरण करने वाला और गुरुद्वेषी होता है।
- चन्द्र लग्न में, मंगल एवं शुक्र हों तो जातक व्यापारी होता है।
- चन्द्र से दशम भाव में यदि मंगल और शुक्र की युति हो तो जातक स्वर्ण-मोती आदि का व्यापार आजीविका हेतु करता है।
- चन्द्र और बुध की युति हो तो जातक मिष्टभाषी, धनार्जन में पटु, सौभाग्य और कीर्ति से युक्त होता है।
- चन्द्र और शुक्र की यदि युति हो तो जातक क्रय-विक्रय में चतुर, शूर, सदृश तथा पुत्र-स्त्री से युक्त होता है।
- चन्द्र-बृहस्पति या चन्द्र-शुक्र यदि परस्पर द्वि-द्वादश हों तो जातक स्वतन्त्र व्यवसाय करता है।
- चन्द्र से सूर्य यदि दशम भाव में हो तो जातक को अनेक उद्योगों से धन लाभ होता है।
- चन्द्र से बृहस्पति यदि तृतीय भाव में और शुक्र एकादश

भाव में हो तो जातक स्वतन्त्र व्यवसाय करता है।

- चन्द्र से दशम भाव में शुक्र हो तो जातक व्यापारी होता है।
- चन्द्र से दशम भाव में शनि हो तो भृत्यों से धनागमन होता है।
- चन्द्र से यदि शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो जातक व्यवसाय से लाभ कमाता है।
- मंगल और बुध की युति हो हो तो जातक वणिक कर्मरती होता है।

आंकड़ों का विश्लेषण और परिणाम

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की जन्मकुंडलियों का अति विस्तृत आकलन किया गया है जिससे उपरोक्त प्रमेयों की सिद्धता परखी जाने के साथ-साथ नवीन सूत्र प्राप्त होने की सम्भावना भी रही।

1) लग्न में स्थित निम्न राशि में व्यवसायी बनने की दर अधिक होती है :

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लग्न	☑	-	☑	-	-	-	-	-	-	☑	☑	-

लग्न, दशम और एकादश भाव में तुला राशि होने के प्रमेय सिद्ध नहीं हुए। दशम भाव में चर राशि होने का अर्थ है कि लग्न में भी चर राशि होगी, यह प्रमेय केवल मेष और मकर पर ही सिद्ध हुआ, अर्थात केवल आंशिक रूप से ही सिद्ध हुआ।

लग्न में मिथुन राशि होने पर व्यवसायी बनने की दर अधिक होती है, यह एक नवीन सूत्र है।

2) ग्रह यदि निम्न वर्णित राशियों में हों तो व्यवसायी बनने की दर अधिक होती है :

	मेष	**वृष**	**मिथुन**	**कर्क**	**सिंह**	**कन्या**	**तुला**	**वृश्चिक**	**धनु**	**मकर**	**कुम्भ**	**मीन**
सूर्य	☑	☑	-	-	-	-	-	-	-	-	-	☑
चन्द्र	-	-	-	-	☑	-	-	☑	-	-	☑	-
मंगल	☑	☑	☑	-	-	-	-	-	-	-	-	-
बुध	☑	-	☑	-	-	-	-	-	-	-	-	-
बृह.	☑	☑	☑	-	-	-	-	-	-	-	☑	☑
शुक्र	☑	☑	☑	-	-	-	-	-	☑	-	☑	-
शनि	-	☑	☑	☑	-	-	-	-	-	-	☑	
राहु	-	-	-	-	-	-	☑	☑	☑	-	-	-
केतु	☑	☑	☑	-	-	-	-	-	-	-	-	-

सूर्य का उच्च राशि मेष और मंगल का स्वराशि मेष में होने का प्रमेय सिद्ध हुआ।

सूर्य का मूल-त्रिकोण/स्वराशि सिंह राशि-स्थिति, चन्द्र की मिथुन या तुला राशि-स्थिति, मंगल की वृश्चिक राशि-स्थिति और बुध को तुला राशि-स्थिति के प्रमेय सिद्ध नहीं हुए।

उपरोक्त आकलन से कुछ नवीन सूत्र भी प्राप्त हुए जिनको सिद्ध प्रमेयों के साथ उपरोक्त तालिका में दर्शाया गया है।

3) ग्रह यदि निम्न वर्णित भावों में हों तो व्यवसायी बनने की दर अधिक होती है :

	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
सूर्य	–	–	–	–	–	☑	☑	–	–	–	–	–
चन्द्र	–	–	–	–	–	–	☑	–	–	☑	☑	☑
मंगल	–	–	–	☑	–	–	☑	☑	–	☑	–	–
बुध	–	–	–	–	–	☑	☑	–	☑	–	–	☑
बृह.	–	☑	–	☑	–	☑	–	–	–	–	–	–
शुक्र	☑	–	–	–	–	–	☑	–	–	–	–	–
शनि	–	–	–	–	–	–	☑	–	☑	–	☑	☑
राहु	–	–	–	–	–	–	–	☑	–	–	–	☑
केतु	–	☑	–	–	–	☑	–	–	–	–	–	–

शनि का सप्तम भाव में होने का प्रमेय सिद्ध हुआ।

सूर्य की दशम भाव-स्थिति, बुध की एकादश भाव-स्थिति, बृहस्पति की सप्तम भाव-स्थिति, शुक्र की द्वितीय, नवम या एकादश भाव-स्थिति और शनि की दशम नवम या एकादश के प्रमेय सिद्ध नहीं हुए।

उपरोक्त आकलन से कुछ नवीन सूत्र भी प्राप्त हुए जिनको सिद्ध प्रमेयों के साथ उपरोक्त तालिका में दर्शाया गया है। उपरोक्त तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रह की सप्तम भाव-स्थिति व्यवसायी बनने में सर्वाधिक सहायक होती है।

4) भावेश की विभिन्न निम्न वर्णित भाव-स्थिति में व्यवसायी बनने की दर से अधिक होती है :

	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
लग्नेश	–	–	–	–	–	☑	☑	–	–	–	☑	–
द्वितीयेश	–	–	–	–	☑	☑	☑	☑	–	–	–	–
तृतीयेश	–	–	–	☑	–	–	☑	–	–	–	–	–
चतुर्थेश	–	–	–	–	–	–	☑	–	☑	☑	–	–
पंचमेश	–	–	☑	–	–	–	☑	–	–	–	–	–
षष्टेश	–	–	–	–	–	–	☑	–	☑	–	☑	–
सप्तमेश	–	–	–	–	–	–	☑	–	☑	–	–	☑
अष्टमेश	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	☑	–
नवमेश	–	–	–	–	☑	–	–	–	–	☑	–	–
दशमेश	–	–	–	–	–	☑	☑	–	–	–	–	–
एकादशेश	–	–	–	☑	–	☑	–	☑	–	☑	–	–
द्वादशेश	–	–	–	–	–	☑	–	–	☑	–	–	☑

लग्नेश की दशम भाव-स्थिति, द्वितीयेश की लग्न या द्वितीय भाव-स्थिति, तृतीयेश की लग्न या दशम या एकादश भाव-स्थिति, चतुर्थेश की तृतीय भाव-स्थिति, सप्तमेश की द्वितीय भाव स्थिति, नवमेश की एकादश भाव-स्थिति, एकादशेश की लग्न या एकादश भाव-स्थिति और द्वादशेश की अष्टम भाव-स्थिति के प्रमेय सिद्ध नहीं हुए।

ग्रहों की भाव-स्थिति के आधार पर प्राप्त सभी सूत्र नवीन हैं। उपरोक्त तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि भावेश की सप्तम भाव-स्थिति व्यवसायी बनने में सर्वाधिक सहायक होती है।

5) ग्रहों की निम्न वर्णित परस्पर स्थितियों में व्यवसायी बनने की दर से अधिक होती है :

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	-	VII, IX, XI	VIII, X, XII	-	II, VI, VII, IX	XI	IV, VIII, IX, X	X, XI	IV, V
चन्द्र	III, V, VII	-	I, II, IV	II, III, V, VI, X	II, VIII	I, V, VI, VII	V, VII	IV, VIII, IX, XI, XII	II, III, V, VI, X
मंगल	II, IV, VI	I, X, XII	-	II, V, VI, X	III, VIII	II, III, IV, VII	III, VIII	III, VIII, XII	II, VI, IX
बुध	-	IV, VIII, IX, XI, XII	IV, VIII, IX, XII	-	I, II, III, VII	-	IV, VIII, IX	II, V, XII	VI, VIII, XI
बृहस्पति	V, VII, X, XII	VI, XII	VI, XI	I, VII, XI, XII	-	X, XI	III, IV, V	VI, VIII, X	II, IV, XII
शुक्र	III	I, VII, VIII, IX	VII, X, XI, XII	-	III, IV	-	III, VI, IX	III, VI, X	IV, IX, XII
शनि	IV, V, VI, X	VII, IX	VI, XI	V, VI, X	V, X, XI	V, VIII, XI	-	III, IV, V, VI, VIII	II, IX, X, XI, XII
राहु	III, IV	II, III, V, VI, X	II, VI, XI	II, IX, XII	IV, VI, VIII	IV, VIII, XI	VI, VIII, IX, X, XI	-	-
केतु	IX, X	IV, VIII, IX, XI, XII	V, VIII, XII	III, VI, VIII	II, X, XII	II, V, X	II, III, IV, V, XII	-	-

चन्द्र से मंगल की युति, चन्द्र से शुक्र की युति और चन्द्र से बृहस्पति की द्वितीय भाव-स्थिति के प्रमेय सिद्ध हुए।

सूर्य-शुक्र की युति, शनि से वेशि योग, चन्द्र से सूर्य की दशम भाव-स्थिति, चन्द्र से दशम में मंगल या शुक्र, चन्द्र और बुध की युति, चन्द्र से शुक्र की द्वितीय भाव-स्थिति, चन्द्र से बृहस्पति की तृतीय भाव-स्थिति, चन्द्र से शुक्र की दशम भाव-स्थिति, चन्द्र से शनि की दशम भाव-स्थिति, चन्द्र से शुभ ग्रहों का केन्द्र में होना और मंगल-बुध की युति के प्रमेय सिद्ध नहीं हुए।

ग्रहों की परस्पर भाव-स्थिति के आधार पर अनेक नवीन सूत्र भी प्राप्त हुए हैं जिनको सिद्ध प्रमेयों के साथ उपरोक्त तालिका में दर्शाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. Cole, A.H. (1969). Definition of Entrepreneurship. J. L. Komives (Ed.), Karl A. Bostrom Seminar in the Study of Enterprise. Milwaukee, USA: Center for Venture Management
2. Drucker, P. F. (1999). Management. New York, USA : Harper Collins e-books.
3. Gartner, W. B. (1988). ET&P. USA: University of Baltimore Education Foundation.
4. शर्मा, ल. न. (2013). ज्योतिष प्रदीप. नई दिल्ली : यूनिकॉर्न बुक्स।
5. वर्मा, कल्याण. (2013). सारावली. (म. चतुर्वेदी, टीकाकार). नई दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास.
6. पराशर. (2000). बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् (सीताराम झा, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेश : मास्टर खिलाड़ी लाल संकटा प्रसाद.
7. जैमिनी. (2014). जैमिनी सूत्रम. (सुरेश चन्द्र मिश्र, टीकाकार). नई दिल्ली : रंजन पब्लिकेशन्स.
8. वराहमिहिर. (2014). बृहज्जातकम्. (सुरेश चन्द्र मिश्र, टीकाकार). नई दिल्ली : रंजन पब्लिकेशन्स.
9. मानसागर. (2008). मानसागरी. (सीताराम झा, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेश : ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार.
10. मन्त्रेश्वर. (2010). फलदीपिका. (गोपेश कुमार ओझा, टीकाकार). नई दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास.
11. वेंकटेश. (2004). सर्वार्थ चिंतामणि. (गुरु प्रसाद गौर, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेश : चौखम्बा सुभारती प्रकाशन.
12. वैधनाथ. (2014). जातक पारिजात. (सुरेश चन्द्र मिश्र, टीकाकार). नई दिल्ली : रंजन पब्लिकेशन्स.
13. ढुण्ढिराज. (2008). जातकाभरणम. (सीताराम झा टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेश : ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार.
14. पाठक, महादेव. (2014). जातकतत्त्वम. (हरिशंकर पाठक, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेश : चौखम्बा सुभारती प्रकाशन.
15. गौर, ऐ. के. कर्नल. (2011). ज्योतिष और आजीविका. नई दिल्ली : वाणी पब्लिकेशन्स.
16. कुमार, कृ. (2005). आजीविका विचार. नई दिल्ली : अल्फा पब्लिकेशन्स.